# इमाम मुहम्मदे बाक़िर अलैहिस्सलाम: फ़िक्री इन्क़ेलाब के अलमबरदार

प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला, अलीगढ़

आसमाने विलायत के पाँचवे ख़ुर्शीद का नाम मुहम्मद और लक़ब बाक़िर है। हमारे अइम्मा में सिर्फ़ मुहम्मद बाक़िर हैं जो माँ-बाप दोनों तरफ़ से पैग़म्बरे गिरामी की औलाद हैं। आपकी वालिदा हज़रत उम्मे अब्दुल्लाह इमाम हसन की दुख़्तरे गिरामी थीं। इमाम बाक़िर[अ०] 57[हि०] यानी इमाम हसन की शहादत के पाँच साल बाद और आशूर-ए-हुसैनी से चार साल क़ब्ल पैदा हुए।

पैग़म्बर[स०] दीन लाए और अली[अ०] और हसन[अ०] ने "जेहाद" और "सुलह" के ज़रिये "जाहिलियत से बग़ावत" और उमवियों के बतदरीज (step by step) घाव करने वाले जरासीम का मुक़ाबला किया और मकतब के असालत की हिफ़ाज़त की कोशिश की। इमाम हुसैन[अ०] ने दूसरे असलहे यानी शहादत के ज़रिए सोए हुए मुसलमानों को जगाया और दीन के पौधे को अपने ख़ून से सींच कर बारआवर किया। और उसके फूलने-फलने की ज़मानत की। जनाब ज़ैनब और सय्यदे सज्जाद "ख़ूने हुसैन" के पैग़ाम्बर थे। उन्होंने अपने फ़रीज़ों को "ख़िताबत" और "दुआ" के ज़रिए अन्जाम दिया। यहाँ तक कि दीन की तदवीन व इशाअत की बारी आई। इस अज़ीम ज़िम्मेदारी का बार इमाम मुहम्मद बाक़िर ने अपने काँधों पर उठाया।

**इमाम मुहम्मद बाक़िर ने दीन फ़ैलाना क्यों ज़रूरी समझा?**

दीन को दलीलों के साथ फैलाना चन्द एतेबार से बहुत ज़रूरी थाः

I- पहले इस वजह से कि इससे पहले के दौर में तलवार के ज़रिये जिहाद, सियासी इक़्दार और ज़ुल्मो सितम, मसाएब और घुटन के माहौल में अइम्मा अहलेबैत के नुक़्त-ए-नज़र की तदवीन इस्तेदलाली अन्दाज़ में आम करने का मौक़ा नहीं मिला था। इसका नतीजा ये हुआ था कि अकसर ज़हनों में शिया अक़ीदों के अकसर गोशे वाज़ेह नहीं हो सके जबकि इसके इन्क़ेलाबी और निज़ाइ पहलू ज़्यादा सख़्ती के साथ ज़हन नशीन थे। उन अक़ीदों और फ़िक्री बुनियादों का ग़ैर वाज़ेह होना इन्हेराफ़ और तफ़रक़े की सूरत में ज़ाहिर हुआ। उस ज़माने में शियों में केसानिया और ज़ैदिया की तरह दूसरे फ़िरक़े भी वजूद में आ गए थे। इन मसलकों और फ़िरक़ों की तमामतर तवज्जो सियासी और जंगी मसाएल की तरफ़ थी और इमामत के अक़ीदे से बख़ूबी वाक़िफ़ न होने की वजह से वह अइम्मा की रहबरी से दूर थे। इन अस्बाब की वजह से इस बात की ज़रूरत थी कि जल्द अज़ जल्द फ़िक़्ही और कलामी मसाएल की इशाअत के लिए शीअी नज़रियात की तदवीन हो जाए।

II- गुज़श्ता हादियाने दीन की कोशिशों के नतीजे में ख़ासकर आशूर-ए-हुसैनी के बाद सियासी नुक़्त-ए-नज़र से शिया काफ़ी मज़बूत हो गए थे। उनका वजूद दाएमी शक्ल इख़्तियार कर चुका था अब इस बात की ज़रूरत थी कि उन की फ़िक्र, अक़ीदे और तहज़ीब की जड़ों को मज़बूत किया जाए।

III- "मकतबे फ़िक्र" की तदवीन और उसको दलीलों के साथ फैलाने की तीसरी वजह ये थी कि उसी ज़माने में एक तरफ़ यूनान, हिन्द और क़दीम ईरान का फ़िक्री और फ़लसफ़ी रवानी, मसीही, बौद्ध, ज़रतश्ती, मानवी और मज्द की अक़ाएद रवानी, राहिबाना और सूफ़ियाना मसलकों की कशिश, तो दूसरी तरफ़ यूनानी फ़लसफ़ियों के डेमोक्रेसी, नौ अफ़लातूनी और अरस्तुवी मकातिबे फ़िक्र दुनियाए इस्लाम में नुफ़ूज़ कर रहे थे। ग़ैर मुस्लिमों की तहरीरों का तर्जुमा और कलामी बहस

और मुनाज़रे शुरु हो चुके थे। इस तरह इस ज़माने में पैग़ामे हक़ इस्लाम के वुजूद को सियासी ख़तरे से ज़्यादा फ़िक्री, तहज़ीबी और दूसरे निज़ामों और मसालिक की फ़िक्री और तहज़ीबी यलग़ार का ख़तरा था। इसी वजह से इमाम बाक़िर और उनके बाद इमाम सादिक़, जो क़ौम के हक़ीक़ी रहनुमा और इस्लाम की इज़्ज़त के निगेहबान थे, उन्होंने नज़रियाती मुहाज़ पर इस्लाम की कोशिश की।

इसी ज़माने में बरसरे इक़्तेदार निज़ाम ''दरबारी इस्लाम'' की तदवीन की फ़िक्र में था और उसे ''हक़ीक़ी इस्लाम'' के नाम से पहचनवाने की फ़िक्र में था, ऐसा इस्लाम जो उमवी और अब्बासी ख़लीफ़ाओं की ख़ुदसरी के लिए साज़गार और उस वक़्त की ''मौजूदा हालत'' का मुहाफ़िज़ हो। हुकूमत से वाबस्ता मुहद्दिसीन, फ़ुक़हा और ख़तीब इस सिलसिले में शिद्दत से कोशिश कर रहे थे। हज़ारों जाली हदीसें आम हो चुकी थीं। इस बात का ज़बरदस्त ख़तरा पैदा हो गया था कि कहीं इन्क़ेलाबी इस्लाम की इन्क़ेलाबी तालीमात को बदल न दिया जाए और फ़रामोश न कर दिया जाए, इन हालात में हुकूमत से सियासी या फौजी मुक़ाबले से ज़्यादा ज़रूरी था कि हक़ीक़ी इस्लाम और ''नज़रियाती मुक़ाबले'' की तदवीन की जाए।

पहली बार इस ज़माने के सियासी हालात ने इस क़दर मोहलत दी थी कि शिया निस्बतन आज़ाद फ़िज़ा में अपने अक़ाएद के नुक़ूश को वाज़ेह कर सकें। इस ज़माने में बनी उमय्या की हुकूमत तबाही की तरफ़ जा रही थी। इस्लामी ममलकत के अतराफ़ो जवानिब में मुसल्लह तहरीकें सर उठा रही थीं, उमवी इक़्तेदार ख़ात्मे की तरफ़ था और अब्बासियों का इस्तेबदाद अभी बरसरे इक़्तेदार नहीं आया था। दुश्मनाने शिया आपस में एक दूसरे से बरसरे पैकार थे। नतीजे के तौर पर शियों को अहलेबैत की तहज़ीब की तबलीग़ और तरवीज के लिए मुनासिब मौक़ा मिल गया था।

इन ही वुजूहात की बिना पर इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के ज़माने से एक नया दौर शुरु होता है जो शिया नज़रियात की तदवीन और उसको इस्तेदलाली तरीक़े से पेश करने और फ़िक्री और तहज़ीबी बुनियादों को मुस्तहकम करने का दौर है। इमाम बाक़िर के ज़माने में इस दौर का आग़ाज़ हुआ और इमाम सादिक़ के ज़माने में ये अपने उरूज पर पहुँच गया।

**इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के ज़माने के हालात**

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के ज़माने के हालात सय्यदे सज्जाद के घुटन वाले दौर से क़दरे मुख़तलिफ़ थे। अब उमवी हुकूमत की बागडोर हज्जाज जैसे जल्लाद के हाथ में थी। इसके बावजूद अइम्मा के लिए बहुत सारी पाबन्दियाँ और महदूदियतें थीं। हालात ग़ैर मुतवाज़न थे। कभी किसी ख़ूँख़्वार हाकिम के इख़्तियारात बढ़ जाने से हालात संगीन हो जाते थे तो कभी नर्म मिज़ाज ख़लीफ़ा के बरसरे इक़्तेदार आने से हालात में कुछ नसबी आज़ादी पैदा हो जाती थी, जैसे उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ के दौर में इमाम को निस्बतन आज़ादी हासिल थी। इस वजह से कभी इमाम की ज़िन्दगी का कोई रुख़ सय्यदे सज्जाद की ज़िन्दगी से मिलता-जुलता है तो कभी कोई रुख़ इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के ज़माने से मुशाबेहत रखता है।

पाँचवें इमाम का दौर 95[हि०] से शुरु होता है। ये ज़माना मुक़तदर तरीन उमवी ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक की ख़िलाफ़त का आख़िरी दौर है। 96[हि०] में वलीद की मौत हुई। इसके बाद सुलेमान बिन अब्दुल मलिक उसका जानशीन हुआ। उसने बारह साल तक हुकूमत की। इसके बाद अलत्तरतीब उमर बिन अब्दुल अज़ीज़, यज़ीद बिन अब्दुल मलिक और हिशाम बिन अब्दुल मलिक मसनदे ख़िलाफ़त पर क़ाबिज़ हुए।

वलीद बिन अब्दुल मलिक ने अपनी ख़िलाफ़त के आख़िरी दौर में हिशाम इब्ने इस्माइल को मदीना की गवरनरी से माज़ूल करके उसकी जगह उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को मुक़र्रर किया। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ एक चौबीस साला जवान था और इब्तेदा ही से दीन की तरफ़ माएल था। इस वजह से उसने मदीने में आते ही सबसे पहला काम जो किया वह ये था कि इमाम बाक़िर[अ०] के हुज़ूर में हाज़िर हुआ और ताज़ीम बजा लाया। इस तरह उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के दौर में

इमाम बाक़िर को असल इस्लाम फैलाने और फ़ज़ाएले अहलेबैत को मुताआरफ़ कराने का मुनासिब मौक़ा मिला।

वलीद बिन अब्दुल मलिक की मौत के बाद उमवियों की ताक़तवर हुकूमत ज़वाल पज़ीर होने लगी। सुलेमान बिन अब्दुल मलिक जो वलीद का जानशीन हुआ, ऐय्याश और इन्तिज़ामी लेहाज़ से अब्दुल मलिक और वलीद का हमपल्ला न था। इसी वजह से उसके दौर में उमूरे हुकूमत की बुनियाद में नुमायाँ कमज़ोरियाँ वाक़े हुईं।

सुलेमान के बाद उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने दो साल पाँच माह हुकूमत की। उमवी ख़लीफ़ाओं में सिर्फ़ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ही वह तनहा ख़लीफ़ा था जिसने ज़ुल्मो सितम से इज्तेनाब किया। उसका झुकाव निस्बतन इस्लाम की तरफ़ था। उसने इमाम, शियों और अलवियों से मुताल्लिक़ सियासत में नम्री बरती और मिंबर पर जनाबे अमीर की शान में नफ़रीन जैसी मज़मूम हरकत को मौक़ूफ़ कर दिया। इस वजह से उस दौर में इमाम बाक़िर को मआरिफ़े इस्लामी की तरवीज का मुनासिब मौक़ा मिला।

उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़, जो उमवी दरबारियों के हाथों ख़त्म कर दिया गया, इसके बाद यज़ीद बिन अब्दुल मलिक बरसरे इक़्तेदार आया। उसने चार साल एक माह हुकूमत की, मगर वह भी ज़्यादातर महल और ऐश व नोश में मशग़ूल था और बनी उमैय्या के जल्द ज़वाल का बाइस बना, यहाँ तक कि हुकूमत की बागडोर हिशाम बिन अब्दुल मलिक के हाथों में आई।

जब हिशाम ने इनाने हुकूमत संभाली, उस वक़्त इराक़ और अतराफ़ में मरकज़ी हुकूमत का वाली ख़ालिदुल क़सरी था। उसने शियों के लिए निस्बतन नम्री दिखाई मगर शीआने अली के साथ उसकी नम्री का हाल जल्द ही हुकूमत पर खुल गया। चुनानचे उसे माज़ूल कर दिया गया। और उसकी जगह यूसुफ बिन उमर अस्सक़फ़ी को जो ख़ूँ-आशाम और जल्लाद उमवी हाकिमों में से था, हाकिम मुक़र्रर किया गया। चुनानचे फिर सरकोबी और ज़ुल्म की सियासत बहाल हो गई। मशहूर मोअर्रिख़ दैनूरी ने लिखा हैः- ''जो भी बनी हाशिम से कुछ ताल्लुक़ रखता था क़ैद में डाल दिया गया''।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] अपनी ज़िन्दगी में इसी क़िस्म के सियासी उतार-चढ़ाव से दोचार रहे। इसी वजह से हम देखते हैं कि इमाम के दौर के बाज़ हिस्से सय्यदे सज्जाद के दौर से मिलते हैं और बाज़ हिस्से इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के दौर से मिलते जुलते हैं।

**घुटन के दौर में इमाम[अ०] की हिक्मते अमली**

घुटन के दौर में इमाम बाक़िर ने वही रवय्या इख़्तियार किया जो सय्यदे सज्जाद ने इख़्तियार किया था और जिद्दोजोहद का वही तरीक़ा अपनाया जो सय्यदे सज्जाद का था। उस दौर में इमाम ज़्यादातर रूहानी रहनुमाई और किरदार साज़ी का फ़र्ज़ अन्जाम देते हैं। उनके लिए सबसे अहम काम ''पैग़ाम'' की हिफ़ाज़त था इमाम पोशीदा और नीम ज़ाहिरी तौर पर शार्गिदों की तरबियत में मशग़ूल रहे।

बनी उमय्या के हुक्मराँ भी एक तरफ़ तो शियों का क़त्लेआम कर रहे थे मगर दूसरी तरफ हेजाज़, इराक़, फ़ारस और तमाम इलाक़ों के लोगों के नज़दीक अइम्मा की मक़बूलियत, असर और क़द्रो एहतेराम के पेशे नज़र कर्बला से मिले हुए शिकस्त के तजुर्बे के पेशे नज़र उनमें अइम्मा को एलानिया शहीद करने की जुराअत नहीं थी। इसी वजह से वह ज़हर ख़ूरानी पर उतर आए थे और ये इस बात का सुबूत था कि वह अवाम में इमामों के असरात से ख़ौफ़ज़दा थे।

ख़ुदग़रज़ और ज़ालिम उमवी ख़लीफ़ा इमामों के इल्मी और रूहानी मक़ाम से वाक़िफ़ थे। अक्सर तारीख़ी वाक़िआत ज़ाहिर करते हैं कि हस्सास और नाज़ुक मौक़ों पर अपनी रहनुमाई के लिए वह इमामों के मोहताज हुए हैं। अइम्म-ए-अहलेबैत ने भी निज़ामे ख़िलाफ़त को कुचलने और रुसवा करने का कोई मौक़ा हाथ से जाने नहीं दिया। यहाँ तक कि दरबारे ख़लीफ़ा में भी इमाम ने पैग़म्बर और आले पैग़म्बर के फ़ज़ाएल का एलान किया जिससे अबुसुफ़यान व आले सुफ़यान की मज़म्मत होती है। इस नुकते से साफ़ ज़ाहिर होता है कि मुसलमान मुआशरे की रहबरी उमवियों ने ग़सब की है फिर भी अगर किसी मामले में वह देखते थे कि

इस्लाम की इज़्ज़त का मामला है तो जनाब अमीर की तरह अपनी राय पेश करने और रहनुमाई से गुरेज़ नहीं करते थे। जैसा कि "अल-महासिन वल मसावा" (बैहक़ी, जि-2, पे-323) में आया है कि जब ख़लीफ़ा ने ग़ौर किया कि इस्लामी हुकूमत में चलने वाले रूमी सिक्कों पर तसलीसी जुमला लिखा होता है, तो उसने हुक्म दिया कि सिक्कों पर इसके बजाए शेआरे तौहीद नक़्श किया जाए। शहंशाहे रूम ने ख़लीफ़ा को धमकी दी कि अगर ऐसा हुआ तो वह हुक्म देगा कि सिक्कों पर पैग़म्बर के लिए इहानत आमेज़ जुमले नक़्श करें। ख़लीफ़ा आजिज़ हो गया, जब कोई उसे इस मख़मसे से नजात न दिला सका तो मजबूरन उसने इमाम बाक़िर को मदीने बुलावाया। चूँकि इस्लाम का मामला दरमियान में आ गया था, इसलिए इमाम ने ख़लीफ़ा की रहनुमाई की कि मुसलमान कारीगरों को जमा करके इस्लामी टक्साल क़ायम किया जाए जिसमें इस्लामी सिक्के ढाले जाएं। इस तरह इस्लामी ममलकत में पहली बार रूमी सिक्के तर्क कर दिये गए और इस्लामी सिक्के रायज हुए। ग़ैरों के मुक़ाबले में हमारे अइम्मा मुसलमान मुआशरे के तमाम मसालेह को पेश नज़र रखते थे।

मगर इसी हाल में इमाम ने निज़ामे ज़ुल्म पर हमला, ज़ालिम से मुक़ाबला और हाकिमों से नफ़रत का इज़हार किया है जबकि हुकूमत का अमला इमाम की मसरूफ़ियतों से बाख़बर रहता था। एक बार अब्दुल मलिक जो बनी उमय्या का क़वी तरीन ख़लीफ़ा था मदीना गया। हाकिमे मदीना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने पूछाः "आप वलीद से मिलने जाएंगे?" इमाम ने नफ़ी में जवाब दिया। मगर फिर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ये नहीं पूछा कि क्यों नहीं जाएंगे, इसलिए कि वह जानता था कि इमाम वलीद को ख़लीफा नहीं समझते। इस से ज़ाहिर होता है कि इमाम का मनफ़ी मुक़ाबला इस क़दर एलानिया होता था जिसकी हुकूमत को ख़बर रहती थी।

मुमकिन है कि ये सवाल पैदा हो कि जब इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] सियासी, सक़ाफ़ती और फ़िक्री सरगर्मियों में मशगूल थे, तो उसको उमवी ख़ुलफ़ा ने किस तरह बर्दाश्त किया और उन्हें क़त्ल या क़ैद क्यों नहीं कर दिया? इसका जवाब ये है कि पहली बात तो ये है कि वलीद के बाद उमवी हुकूमत की हालत काफ़ी सक़ीम थी। दुनियाए इस्लाम में चारों तरफ़ तहरीकें और बग़ावतें सर उभार रही और अरबाबे हल्लो अक़्द शोरिशों को दबाने में शबो रोज़ मशगूल थे। दूसरी बात ये है जैसा कि हम बता चुके हैं कि कर्बला में हुसैनी कारनामे और ज़ैनब व सय्यदे सज्जाद के इफ़शाए हक़ीक़त की वजह से यज़ीद के बाद उमवी ख़लीफ़ाओं के लिए ज़रूरी हो गया था कि वह इमामों से बराहे रास्त उलझने या उन्हें क़ैद करने से गुरेज़ करें। चुनानचे उन्होंने ने मुनाफ़िक़ाना तर्ज़े अमल इख़्तियार किया यानी हक़ीक़तन वह ख़ुद इमाम के कितने ही दुश्मन क्यों न हों बज़ाहिर अवाम के सामने उनकी बड़ी इज़्ज़त करते थे, मसलन जब वलीद बिन अब्दुल मलिक मदीना आया और मस्जिद में इमाम को देखा तो सरोक़द ख़ड़ा हो गया और इमाम को अपने सामने बिठाया, हालांकि अन्दुरूनी तौर पर वलीद इमाम का सख़्त दुश्मन था मगर अवाम के सामने इमाम से अपना लगाव ज़ाहिर करता था और ये हुसैन[अ०] की शहादत और ज़ैनब व सय्यदे सज्जाद की मज़लूमियत का नतीजा था जिसने दुनिया के क़वी तरीन इन्सान को मज़लूमियत से ख़ौफ़ज़दा कर दिया था।

**निस्बतन आज़ादी के दौर में इमाम की हिक्मते अमली**

जैसा कि हम बता चुके हैं कि पाँचवें इमाम का दौर उतार चढ़ाव का दौर था। शियों की फ़िक्री और तहज़ीबी सरगर्मी के लिए कभी-कभी इस क़दर मौक़ा मिल जाता था कि इमाम मुहम्मद बाक़िर ने इससे फ़ायदा उठाया और तदवीने मकतब और मआरिफे अहलेबैत को आम करने का काम शुरु कर दिया। (इसी काम को इमाम सादिक़ ने मुकम्मल किया) इमामों का इदराक आम ज़ी फ़हम हज़रात जैसा न था बल्कि "हिक्मते ख़ुदादाद" थी और ये हज़रात फ़ैज़ाने इलाही के सरचश्मे से सैराब होते थे। मगर हमारे लिए अहम नुक़ता ये है कि हम ये देखें कि अइम्मा ने किन हालात में किस क़िस्म की हिकमते अमली इख़्तियार की, क्या-क्या इक़दामात किये, किन हालात में "पैग़ाम" को फैलाया

और किन सूरतों में पैग़ाम को निज़ाम की शक्ल में ढाला।

मुख़्तलिफ़ वुजूहात की बिना पर जिनकी वज़ाहत इस बाब के इब्तेदाई सफ़हात में की जा चुकी है इमाम बाक़िर ने महसूस किया कि नज़रियात की तबलीग़ का सही वक़्त आ पहुँचा है। चुनानचे मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से उन्होंने नज़रियात की तबलीग़ की इब्तेदा कर दी।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] ने मआरिफ़े इतरते अतहार को आम करने की ग़रज़ से एक अज़ीम दानिश्गाह की बुनियाद रखी जहाँ दुनियाए इस्लाम की इल्मी हलके से इमाम के दर्स में सैकड़ों और हज़ारों की तादाद में मुमताज़ शख़सियतें हाज़िर होती थीं और इस मआरिफ़े इलाही के सरचश्मे से इक्तेसाबे फ़ैज़ करती थीं।

इस ख़ुर्शीदे इमामत से कस्बे फ़ैज़ करने में इस्लाम के तमाम फ़िरक़ों के लोग शामिल हैं और अहले सुन्नत के जय्यद उलमा में से कुछ हज़रात को इमाम बाक़िर की शार्गिदी पर फ़ख़्र है जिनमे ज़ोहरी, अता बिन जुरैह और क़ाज़ी हफ्स बिन ग़यास का नाम लिया जा सकता है।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के शार्गिदों ने हदीस तफ़सीर, फ़िक़्ह, कलाम और मआरिफ़े इस्लामी के तमाम शोबों को इल्मो इरफ़ान की दौलत से मालामाल कर दिया है और इन मैदानों में शीआी नुक़्त-ए-नज़र को मुदव्वन किया है। मिसाल के तौर पर अबान बिन तग़लब जो इल्मे क़राअते क़ुरआन और फ़िक़हुल लुग़त में यकताए ज़माना थे। वह पहले शख़्स थे जिन्होंने क़ुरआन की मुश्किल ताबीरों की शरह किताबी सूरत में ''ग़राएबुल क़ुरआन'' के नाम से लिखी। अबुजाफ़र मुहम्मद बिन हसन, अबी सरह और इस्माईल बिन अब्दुर्रहमान अस्सौदी जैसे अफ़राद अपने ज़माने के अज़ीम तरीन मुफ़स्सिरीने में से थे और मुसलमानों के लिए इल्मे तफ़सीर के इरतेक़ा की सिम्त राहनुमा और संगेमील की हैसियत रखते थे। जाबिर बिन यज़ीद जोअ़फ़ी और यह्या बिन क़ासिम अबुबसीर असदी अज़ीम मुहद्दिसीन में से थे। मुहम्मद बिन मुस्लिम ने इमाम बाक़िर से तीस हज़ार हदीसें नक़ल की हैं। इल्मुल कलाम में अब्दुल्लाह बिन मैमून और ज़ुरारा बिन अअ़्युन ने इल्मे कलाम के शीआी नुक़्त-ए-नज़र को मुदव्वन किया। फ़िक़्ह में आमिर बिन मुआविया ज़हनी, सालिम बिन अबी हफ़्सा, अबु यूनुस कूफ़ी और यह्या बिन क़ासि अबु बसीर असदी जैसे अफ़राद ने शिया फ़िक़्ही निज़ाम की तदवीन के सिलसिले में अहम क़दम उठाए। ये सब के सब इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] की दर्सगाह के परवरदा थे। (किताब- उस्वहा-ए-जावेद से)

**बक़िया....... इमाम मुहम्मद तक़ी(अ०) व इमाम अली नक़ी(अ०) की सीरत**

किया जाना और आपके इनकार पर ये फ़रमाइश कि कुछ अशआर ही सुनाइये और आपको इस मौक़े से वाज़ के लिए गुन्जाइश निकालना और बेएतेबारि-ए-दुनिया और मुहासब-ए-नफ़्स की दावत पर मुशतमिल वह अशआर पढ़ना जिन्होंने इस महफिले ऐश को मजलिसे वाज़ में तबदील करके वह असर पैदा किया कि हाज़िरीन ज़ारो क़तार रोने लगे और बादशाह भी चीखें मार-मार कर गिरया करने लगा। ये उन्ही हज़रत ज़ैनुलआबेदीन[अ०] के वारिस का काम हो सकता था जिन्होंने दरबारे इब्ने ज़ियाद व यज़ीद में इज़हारे हक़ाएक़ के किसी मौक़े को कभी नज़रअन्दाज़ नहीं किया।

क़ैद के ज़माने में आप जहाँ भी रहे आपके मुसल्ले के सामने एक क़ब्र खुदी हुई तैयार रहती थी। ये ज़ालिम ताक़त को उसके बातिल मुतालब-ए-इताअत का एक ख़ामोश और अमली जवाब था यानी ज़्यादा से ज़्यादा तुम्हारे हाथ में जो है वह जान का ले लेना मगर जो मौत के लिए इतना तैयार हो वह ज़ालिम हुकूमत से डर कर बातिल के सामने सर क्यों ख़म करने लगा।

फिर भी मिस्ल अपने बुज़ुर्गों के हुकूमत के ख़िलाफ़ किसी साज़िश वग़ैरा से आपका दामन ऐसा बरी रहा कि बावजूद दारुस्सलतनत के अन्दर मुस्तक़िल क़याम और हुकूमत के सख़्त तरीन जासूसी निज़ाम के आपके ख़िलाफ़ कोई इल्ज़ाम कभी आएद नहीं किया जा सका हालांकि अब्बासी सलतनत अब कमज़ोर हो चुकी थी। और वह दम तोड़ने के क़रीब थी मगर आले मुहम्मद[अ०] न उन हुकूमतों को हमेशा अपनी मौत मरने के लिए छोड़ा। उनके ख़िलाफ़ कभी किसी इक़दाम की ज़रूरत महसूस नहीं फरमाई।